ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 5 अंक : 2 दिसम्बर 2014-जनवरी 2015 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

काल सर्प दोष व उपाय	डा. महेश पारासर	2
शनि के दुष्प्रभाव को कम करने हेतु प्रभावी उपाय	डा. रचना के भारद्वाज	4
वास्तु से सम्बन्धित कुछ प्रश्नो के उत्तर	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
कालसर्प योग और उसके प्रकार	पुष्पित पारासर	6
वास्तुशास्त्र सकारात्मक ऊर्जा का विज्ञान है	डा. अरविन्द मिश्र	7
तिल बतायें 'हाल ए दिल'	पवन कुमार मेहरोत्रा	8
पुत्रदा एवं षटृतिला एकादशी व्रत	पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	9
कौन मुक्त हुया श्राप से शिवरात्रि के दिन	पं. अजय दत्ता	11
नववर्ष में कुछ नया करें	सुरेश अग्रवाल	11
वायु मुद्रा	विष्णु पाराशर	12
Kemdrum Yog	वरून गुप्ता	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
मौके का फायदा	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

काल सर्प दोष व उपाय

प्रश्न– कालसर्प दोष क्या है?

उत्तर– राहु और केतु के मध्य यदि अन्य सभी 7 ग्रह आ जाएं, तो काल सर्प दोष होता है। यदि राहु सभी ग्रहों को ग्रसित करें, तो उदित रूप से एंव यदि केतु ग्रसित करे, तो अनुदित रूप से योग बनता है। यदि सातों ग्रहों में से एक बाहर निकल जाए तो यह योग आंशिक कहलाता है।

प्रश्न– इसका फल क्या है?

उत्तर– जिस जातक की कुंडली में काल सर्प दोष होता है, उसे सफलता प्राप्त करने के लिए बार– बार प्रयत्न करने पडते है। कई बार सफलता सामने रहते हुए भी प्राप्त नही हो पाती। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि जिस जातक की कुंडली में यह दोष हो, वह ऊपर नहीं उठ सकता। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनके जातकों ने सर्वोच्च पद प्राप्त किया और प्रतिष्ठित व्यक्ति बने, जैसे स्व. जवाहर लाल नेहरू , इंदिरा गांधी आदि।

प्रश्न– क्या काल सर्प दोष के फल हर जातक को अलग अलग रूप में मिलते है?

उत्तर– राहु जिस भाव में स्थित होता है, उसी के अनुरूप मुख्यतः 12 प्रकार के काल सर्प दोष कहे गये है। जातक को फल भी उसी के अनुसार भिन्न भिन्न मिलते है। किसी को इस दोष के कारण पारिवारिक कलह का सामना करना पडता है, तो किसी को व्यवसाय में स्थिरता या अवनति का, किसी को हानि का, तो किसी को रोग का ।

प्रश्न– परिवार में यह दोष एक को हो, तो क्या सबको होता है?

उत्तर– ऐसा आवश्यक नही है कि परिवार में काल सर्प दोष पिता की कुंडली में हो तो संतान को भी होगा। लेकिन अक्सर ऐसा देखने में आता है कि एक परिवार के कई सदस्यों को यह दोष एक साथ होता है। आगे संतान को यह दोष न हो, इसके लिए काल सर्प दोष की शाति अवश्य करा लेनी चाहिए।

प्रश्न– कालसर्प दोष क्या हमेशा रहता है, या किसी विशेष अवधि तक?

उत्तर– ज्योतिष में दोष 2 प्रकार के होते है– कुछ दोष कुछ अवधि के लिए, किसी गोचर, या दशा के कारण और कुछ जन्मकुंडली में दोष के कारण। दूसरे दोष का असर पूरी उम्र सहना पडता है। कालसर्प दोष भी एक इसी प्रकार का दोष है, जो जातक को जिंदगी भर कुछ न कुछ कष्ट देता रहता है। लेकिन फिर भी जब जब राहु की दशा, या अंतर्दशा आती है, या राहु एंव केतु के ऊपर कोई ग्रह गोचर करता है, तब तब इसका प्रभाव अधिक हो जाता है।

प्रश्न– काल सर्प दोष के मुख्य उपाय क्या है?

उत्तर– भगवान शिव की आराधना एंव रूद्राभिषेक करें या करायें। अपने वजन के बराबर अन्न दान करें। सिद्ध कालसर्प यंत्र को पूजा में रखें एवं रोजाना गुग्गुल धूपबत्ती दिखायें। महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जप करें। सबसे श्रेष्ठ उपाय है कि व्यक्ति को महाशिव रात्रि एवं नाग पंचमी के दिन कालसर्प योग की शान्ति विधिवत रुप से किसी योग्य ब्राह्मण से करानी चाहिये, जिससे व्यक्ति को पूर्ण लाभ की अनुभूति हो एवं जिस कारण की वजह से शान्ति करायी जा रही है वह समस्या भी दूर हो।

प्रश्न– काल सर्प दोष के सरल उपाय क्या है?

उत्तर– भिखारी को राहु की वस्तुओं, जैसे काले तिल, राई, काले कपडे आदि का दान दें। महामंत्र **ऊँ नमः शिवाय** का जाप करें। नाग पंचमी, महाशिव रात्रि आदि को व्रत रखें। काल सर्प यंत्र गले में धारण करें। शिव के प्रतीक एकमुखी रूद्राक्ष सहित रूद्राक्ष की माला धारण करें।

प्रश्न– क्या एक बार उपाय करने से काल सर्प दोष सदा के लिए दूर हो जाता है?

उत्तर– ज्योतिष में किसी भी दोष को दूर करने के लिए किये गये उपायों का असर अधिकतम एक वर्ष तक ही रहता है। अतः काल

सर्प दोष के उपायों को प्रतिवर्ष अवश्य करना चाहिए। यदि दोष अधिक हो, तो कुछ सरल उपाय प्रतिमाह, या प्रतिसप्ताह करने चाहिये।

प्रश्न– काल सर्प दोष पहले कभी सुनने में नहीं आया, तो क्या यह अभी शुरू हुआ है?

उत्तर– अनेक योग पत्री में विद्यमान होते है, जिनकी चर्चा विशेष रूप से नहीं हो पाती है। इसका अर्थ यह नहीं कि वे दोष, या योग पहले नहीं थे। प्राचीन शास्त्रों में इस योग का उल्लेख विभिन्न रूपों में आया है लेकिन कभी किसी योग की चर्चा, किसी काल विशेष में अधिक होने के कारण सभी ज्योतिर्विदों एंव जनसाधारण तक पहुंच जाती है। ऐसा ही कालसर्प योग के साथ हुआ है। आजकल यह योग, अंतरिक्ष में बनने के कारण अधिक चर्चित है।

महेश पारासर

अमृत वचन

जीवन अन्धकारमय है यदि आकांक्षा न हो। आकांक्षाएँ अन्धी हैं यदि ज्ञान न हो। ज्ञान व्यर्थ है यदि कर्म न हो और कर्म खोखला है यदि प्रभु प्रेम न हो।

अध्यात्म का साधक सिंह की भाँति अकेला होता है। भीड़ तो भेड़ियों की होती है।

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लेक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेय गुरू जी,

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि भविष्य निर्णय पत्रिका में कालसर्प दोष के ऊपर कुछ जानकारी प्रकाशित करने की कृपा करें क्योकि इसको लेकर काफी भ्रान्तियाँ है।

कौशल आन्नद, आगरा।

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का अक्टूबर–नबम्बर का अंक प्राप्त हुआ, जो कि दीपावली के ऊपर था। पत्रिका में सभी लेख बहुत अच्छे थे। आपका दीपावली पूजन विधि बताने हेतु कोटि कोटि धन्यबाद।

सीताराम शास्त्री, मथुरा।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मेरे पूरे शरीर में दर्द रहता है। उपाय बतायें?

माधुरी शर्मा, आगरा

उत्तर– आपका लग्नेश कमजोर है तथा वर्तमान में षष्टेश की महादशा चल रही है। एक 8.50 रत्ती का मोती तुरन्त धारण करें तथा शिवजी की पूजा करें। मार्च 2015 के बाद आराम मिल जायेगा।

प्रश्न 2. मेरी माँ से मेरे सम्बंध अच्छे नही रहते। कारण व उपाय बतायें?

अविनाश मित्तल, ग्वालियर

उत्तर– आपकी कुंडली में चन्द्रमा द्वादश भाव में बैठा है। तथा राहु और शनि से दृष्ट है। गले में मोती वाला चन्द्रमा धारण करें तथा राहु व शनि के मंत्रो का जाप करें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. मेरे घर में सभी स्त्रियाँ बीमार रहती है। उपाय बतायें।

गौरव शर्मा , आगरा

समाधान– आपके घर में उत्तर पश्चिम दिशा में ढाल अधिक है। उसे समतल करायें तथा किसी वास्तुशास्त्री से पूरे घर का वास्तु व ऐनर्जी चैक करवाये। अवश्य आराम मिलेगा।

समस्या– 2. मेरे घर का नक्शा संलग्न है। सही मार्ग दर्शन करें ।

रोहित वर्मा, आगरा

समाधान– आपके घर में पूर्व दक्षिण दिशा बढ़ रही है। ठीक नही है। इसे एक सीध में करके आप अपने घर को कई परेशानियों से बचा सकते है।

पं. अजय दत्ता

शनि के दुष्प्रभाव को कम करने हेतु प्रभावी उपाय

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

1. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि दशम भाव में बैठकर अशुभ फल देने लगे, तो ऐसे जातक को मांस शराब का त्याग करना चाहिए और अड़तालीस वर्ष की आयु सें पहले स्वंय का मकान नहीं बनाना चाहिये। केले तथा चने की दाल मंदिर में देनी चाहिये। हरि की पूजा करनी चाहिये और पीपल, ब्राह्मण, सन्यासी तथा कुल गुरू की सेवा करनी चाहिये।

2. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि सप्तम भाव में बैठकर अशुभ फल देने लगे, तब जातक शहद से भरा हुआ मिटटी का बर्तन या बांस में चीनी शक्कर भरकर किसी निर्जन स्थान में गाड़ दे।

3. यदि किसी जातक की जन्मकुडली में किसी भी राशि का शनि तीसरे भाव में बैठकर अशुभ फल देने लगे, तब जातक मांस, मदिरा का सेवन न करे और घर के सिरे पर अंधेरा कमरा रखे तथा जातक के घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में हो तथा जातक गणेश उपासना करे। तिल, नीबू केले दान करे। काले तिल पानी में विसर्जित करे। नौ वर्ष में कम आयु की कन्याओ को खटटा भोजन दे। घर में काला कुत्ता पालकर उसकी सेवा करें। अच्छा व्यवहार और अच्छा चाल–चलन रखें।

4. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि लग्न में बैठकर अशुभ फल देने लगे, तब जातक बन्दरों की सेवा करें तथा चीनी मिला हुआ दूध बड़ के पेड की जड़ में डाले, फिर उस गीली मिटटी से तिलक करें तथा झूठ न बोलें और दूसरों की वस्तुओं पर बुरी दृष्टि न डालें।

5. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि भाग्य भाव में बैठकर अशुभ फल देता हो तो जातक को अपने घर की छत पर ईधन, कबाड़ आदि नही रखना चाहिये। घर के सिरे के कमरे में अंधेरा रखना चाहिये। पीपल के पेड़ में पानी डालना चाहिये और गुरूवार का व्रत रखना चाहिये। चांदी के टुकड़े में हल्दी का तिलक लगाकर अपने पास रखें। ब्राह्मण, साधु एंव कुलगुरू की सेवा करें। पीले धागे में हल्दी का टुकड़ा लपेटकर अपनी भुजा में बांधे।

6. यदि किसी जातक की कुंडली में किसी भी राशि का शनि अशुभ फल पंचम भाव में बैठकर दे रहा हो, तब जातक अपने पास स्वर्ण एंव केसर रखे तथा मंदिर में कुछ अखरोट ले जाये, उनमें से आधे वापस लाकर सफेद कपड़े में लपेटकर घर में रखें। नाक व मुख को सदैव साफ रखें। बहनों की सेवा करें। स्टील का छल्ला पहने, साबुत हरी मूंग मंदिर में दान करे व दुर्गा माता की पूजा करे।

7. यदि किसी जातक की जन्म कुडली में किसी भी राशि का शनि बारहवें भाव में बैठकर अशुभ फल देने लगे, तब जातक झूठ न बोले। मांस, शराब व अंडे का सेवन न करें, तथा घर की अंतिम दीवार में खिड़की या दरबाजा न रखें।

8. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि षष्ठम भाव में बैठकर अशुभ फल देने लगे, तब जातक पुरानी वस्तुएं खरीदें, किंतु चमड़े तथा लोहे की बनी हुई कोई वस्तु न खरीदें।

9. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि चतुर्थ भाव में होकर अशुभ फल दे रहा हो, तब जातक कुंए में दूध डाले। सांपो की रक्षा करें तथा सांपो को दूध पिलाये। बहते पानी में शराब डालें, हरे रंग की वस्तुओं का प्रयोग न करें तथा काले कपड़े न पहने, मजदूरों की सहायता करें और भैंस एंव कौओं को भोजन प्रदान करें।

10. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि एकादश भाव में होकर अशुभ फल देने लगे, तब जातक अपने घर में चांदी की ईट रखे। मांस शराब का सेवन न करें। ऐसे घर मे रहे, जिसका मुख्य द्वार दक्षिण में न हो।

11. यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में किसी भी राशि का शनि द्वितीय भाव में अशुभ फल देने लगे, तब जातक अपने माथे पर दूध या दही का तिलक लगाए तथा स्लेटी रंग की भैंस पालकर उसकी सेवा करें तथा सांपों को दूध पिलाए।

12. काली गाय को प्रतिदिन रोटी देने के साथ कह देना चाहिऐ कि महाराज शनि के लिए मैं यह दान कर रहा हूँ क्योकि गाय सर्वदेवमयी है इससे शनि हलका हो जाता है।

13. छाया पात्र का दान करने से जो शनिवार के दिन ही होता है, जिस को भी शनि हो वह स्टील की कटोरी में तेल भर कर और अपना मुख देख करके और काले कपड़े में काले उड़द सवा किलो

शेष पेज 16 से आगे.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

वास्तु से सम्बन्धित कुछ प्रश्नो के उत्तर

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

प्रश्न– क्या वास्तु द्वारा भाग्य बदला जा सकता है?

उत्तर– ईश्वर ने मनुष्य को कर्मशील बनाया है एंव कर्म करने से वह अपने दुःखों को कम अवश्य कर सकता है। इसी प्रकार वास्तुदोष निवारण द्वारा अपने दुख अवश्य कम किये जा सकते है।

प्रश्न– यदि घर में बीमारी है तो क्या वास्तु दोष निवारण द्वारा बीमारी को दूर भगाया जा सकता है?

उत्तर– कुछ बीमारियां वास्तुदोष के कारण होती है। उनको वास्तु दोष निवारण द्वारा ठीक किया जा सकता है। या उनमें कमी लायी जा सकती है। जैसे– दमा, घुटनो में दर्द एंव खांसी आदि। लेकिंन कुछ रोगों का कारण शरीर की क्षमता या कुंडली ही होती है। ऐसे लोगों को वास्तु दोष द्वारा ठीक नहीं किया जा सकता है। उनको कुंडली के उपयोग द्वारा ठीक किया जा सकता है।

प्रश्न– क्या वास्तु द्वारा घर की दरिद्रता दूर की जा सकती है?

उत्तर– यदि दरिद्रता वास्तु दोषो के कारण है। तो यह अवश्य ठीक की जा सकती है। जैसे घर में कलह हो तो लक्ष्मी नहीं टिकती है।

प्रश्न– किराये के घर में भी क्या वास्तु की प्रांसगिकता होती है?

उत्तर– घर किराये का हो या अपना और केवल अस्थायीरूप से उसमें रह रहे हों, जैसे होटल इत्यादि में हर जगह वास्तु पूर्ण रूप से प्रासंगिक होता है। जिस प्रकार से किसी नाव में जा रहे हों और नाव में सुराख हो जाये, जो अवश्य ही डूब जायेगे। चाहे यह नाव अपनी हो या किराये की, या फिर केवल उसमें यात्रा कर रहे हो।

प्रश्न– जीवन पर देश, या शहर के वास्तु का अधिक प्रभाव होता है या घर के वास्तु का?

उत्तर– देश और शहर का वास्तु घर के वास्तु से ऊपर होता है। जिस प्रकार हवाई जहाज से जा रहे हों और हवाई जहाज खराब हो जाए, तो जीवन भी हवाई जहाज के साथ नष्ट हो जाएंगा, उसी प्रकार से देश में युद्ध होता है, या देश उन्नति करता है, तो उसके सभी नागरिकों पर उसका असर पडता है। लेकिन फिर भी अपने घर का वास्तु देश के वास्तु के औसतन वास्तु फल से ऊपर या नीचे ले जा सकता है। देश का वास्तु ठीक नहीं कर सकते लेकिन घर का वास्तु ठीक कर के अपने आप को समृद्धिशाली बना सकते है।

प्रश्न– यदि घर में वास्तु दोष है तो क्या बिना तोडे फोडे वास्तु द्वारा दोष का निवारण हो सकता है?

उत्तर– वास्तु के कुछ दोष ऐसे होते है, जो बिना आपरेशन किये अर्थात तोडे फोडे ठीक नहीं हो सकते। लेकिन कुछ दोषों में बिना तोडे फोडे भी अल्पता लायी जा सकती है। जैसे शौचालय का ईशान में होना या रसोईघर का आग्नेय में नहीं होना। इन दोषों को उपाय द्वारा ठीक किया जा सकता है। लेकिन यदि घर का दालान उल्टा हो या नेकृत्य में कुंआ हो तो उपाय पूर्ण रूप से कारगार नहीं होते।

प्रश्न– आम मनुष्य कैसे जाने कि घर वास्तु के अनुकूल है या नही?

उत्तर– यदि किसी स्थान में प्रवेश करने के पहले या वर्तमान आवास में साज सज्जा या काम करवाने से पहले कारोबार ठीक चलता था, या शांति रहती थी और केवल स्थान परिवर्तन के बाद कारोबार नीचे गिर रहा हो या घर में शांति नही रहती हो, जबकि पूर्ण लग्न और क्षमता से कार्य कर रहे हो तो इसका तात्पर्य है कि स्थान में वास्तु दोष है। अपनी जन्मकुण्डली से भी जान सकते है कि ग्रह अनुकूल है या नहीं। यदि ग्रह अनुकूल होने पर भी सफलता नहीं मिल रही है तो अपने घर का वास्तु किसी वास्तु–शास्त्री से अवश्य ठीक कराएं।

प्रश्न– यदि घर में वास्तु दोष है और जीवन भी पूर्णतः सुखी और शांत है तो क्या तब भी वास्तु दोष का निवारण करना चाहिए?

उत्तर– कई बार ग्रह स्थिति अनुकूल होती है तो वास्तु दोष महसूस नहीं होता है। लेकिन जब ग्रहस्थिति बदलती है तो वास्तु दोष प्रभावी हो जाता है। यह इसी प्रकार से है जैसे किसी बड़ी नाव में यदि छेद हो तो आवश्यक नहीं कि डूब जायेगे। लेकिन यदि बहुत समय तक उसी नाव में बैठ कर यात्रा करते रहें तो एक समय ऐसा आएगा कि नाव डूब जाएगी।

प्रश्न– फेंगसुई और वास्तु के नियमों में भिन्नता है। किसकी माने?

उत्तर– फेंगसुई का मूल चीन में होने के कारण इसके नियम वास्तु के नियमों से भिन्न है जो वहाँ की स्थिति के अनुसार ठीक है। दोनो को मिलाकर उपाय करना ठीक नहीं हैं। भारत में भारतीय वास्तु नियम ही पूर्ण रूप से लागू होते है।

शेष पेज 19 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

कालसर्प योग और उसके प्रकार

पुष्पित पारासर
ज्योतिष , वास्तु ऋषि, अंक विशारद,
नजर दोष विशेषज्ञ, हस्ताक्षर विशेषज्ञ

कालसर्प योग क्या है? ज्यादातर व्यक्ति को भ्रमित किया जाता है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प योग है इसीलियें यह समस्यायें आ रही है परन्तु असल में उनकी कुण्डली में कालसर्प योग होता ही नहीं है ऐसे कई व्यक्ति है जिनको अपनी 40 से 50 साल की उम्र तक यही ज्ञात रहता है कि उनकी कुण्डली में कालसर्प योग है इसीलिये उनके जीवन में समस्यायें आ रही है परन्तु उनकी कुण्डली में कालसर्प योग होता ही नहीं है। कालसर्प योग तब बनता है जब राहु–केतु के बीच में सारे ग्रह हो। उसके प्रकार निम्न है :–

1. अनन्त कालसर्प योग– लग्न और सप्तम भाव के बीच सभी ग्रह राहु केतु के बीच होने पर अनन्त कालसर्प योग बनता है। इसके कारण जातक का स्वास्थ्य ठीक नही रहता, मान प्रतिष्ठा को भी ठेस पँहुचती है। मेहनत के अनुरूप उचित फल न प्राप्त होने की वजह से मानसिक अशान्ति रहती है। वैवाहिक जीवन में भी कलह की स्थिति बनी रहती है। इस योग वाले जातक को **ऊँ नमः शिवाय ऊँ महामृत्युंजय नमः** मंत्र का जाप नियमित रूप से करना चाहिए।

2. कुलिक कालसर्प योग– इस योग में राहु द्वितीय भाव में और केतु अष्टम भाव में होता है तथा बाकी सब ग्रह इनके बीच में होते हैं। इस योग के कारण जातक का पारिवारिक जीवन कलहमय होता है और वह कर्जे में दबा रहता है। उसे आंख, कान नाक के रोग परेशान करते रहते है। अतः वह हमेशा मानसिक रूप से परेशान और खिजा खिजा रहता है।

3. वासुकी कालसर्प योग– इस योग में राहु तृतीय तथा केतु नवम भाव में तथा सभी ग्रह इनके बीच में होते है। इस योग के कारण स्वजनों और भाई बहनों की वजह से कोई न कोई परेशानी बनी रहती है और इसी वजह से उसे आर्थिक और मानसिक तनाव बना रहता है। भाग्योदय में भी विलम्ब तथा अडचने आती है। साझेदारी का कारोबार इन्हें बिल्कुल नहीं फलता।

4. शंखपाल कालसर्प योग– इस योग में राहु और केतु क्रमशः चतुर्थ और दशम भाव में स्थित होते है तथा बाकी सातों ग्रह इनके बीच होते है। इस योग के कारण जातक के विद्या अर्जन में रूकावटें आती है, माता और बहिन का सहयोग नहीं प्राप्त होता है तथा घर में सुख शान्ति नहीं रहती है और जातक अनजान भय से डरा डरा सा महसूस करता है।

5. पदम कालसर्प योग– यह योग पंचम में राहु और एकादश में केतु के बीच सभी ग्रहों के स्थित होने से बनता है। इस योग के कारण संतान उत्पति में बाधा आती है। सट्टे और लाटरी में बाधा आती है। सट्टे और लाटरी में नुकसान उठाना पडता है। दिमाग में हमेशा अनहोनी की आशंका बनी रहती है। संतान की ओर से भी चिन्ता घेरे रहती है। उच्च शिक्षा प्राप्ति में भी काफी रूकावटों का सामना करना पडता है।

6. महापद्म कालसर्प योग– इस योग में सभी ग्रह छठे से 12वें भाव में राहु केतु के बीच में स्थित होते है। छठा घर चूंकि रोग और कर्जे तथा नुकसान का है अतः जातक बीमारी से पीडित हो सकता है तथा दवा दारू पर व्यय करेगा और कोर्ट कचहरी पर भी व्यर्थ के खर्चे करेगा। वह बार बार झटके से भारी खर्चो का बोझ उठाता हुआ परेशान रहेगा। इस जातक के मामा को भी दशा अन्तर्दशा में कष्ट उठाने पड़ सकते है।

7. तक्षक कालसर्प योग– इस योग में राहु सप्तम तथा केतु लग्न में स्थित होता है तथा बाकी सातों ग्रह इनके मध्य स्थित होते हैं। इस योग के कारण जातक का दाम्पत्य जीवन डांवाडोल स्थिति में होता है। साझेदारी के धंधे में नुकसान उठाना पड़ता है तथा साझेदार धोखा दे जाते है। जातक को दुख और कष्ट से जीवन यापन करना पडता है। गुप्त रोगों के होने की भी संभावना बनी रहती है।

8. कर्कोटक कालसर्प योग– जब राहु अष्टम और केतु द्वितीय भाव में स्थित हो और बाकी सारे सातों ग्रह उनके मध्य में हो तो कर्कोटक कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण जातक का अपने परिवारजनों से हमेशा मतभेद बना रहता है। यदाकदा उसको धन की हानि होती रहती है। और पैतृक सम्पति से भी कुछ खास लाभ नहीं होता। भाग्योदय भी देर से तथा काफी संघर्ष और अड़चनों का सामना करने के पश्चात् होता है। उच्च शिक्षा और प्रशासनिक सेवाओं की उपलब्धि में बहुत रूकावटें आती है।

9. शंखचूड़ कालसर्प योग– राहु नवम भाव में स्थित हो ओर केतु तृतीय भाव में तथा बाकी सभी ग्रह इनके बीच में हो तो शंखचूड़ कालसर्प योग बनता है। इस योग वाला जातक भाग्य के हाथों खिलौना बनकर रह जाता है। नौकरी व्यवसाय में अक्सर सापं सीडी वाली स्थिति बनती रहती है और स्थायित्व की कमी रहती है। इन जातकों का परिवार के सदस्यों, खास करके बुजुर्गो से अनबन और विचारों में मतभेद रहता है।

10. घातक कालसर्प योग– इस योग में राहु केतु क्रमशः दशम और चतुर्थ भाव में होते हैं और अन्य ग्रह उनके मध्य में। इस कालसर्प योग से प्रभावित जातक के काम काज में अनिष्टकारी स्थिति बनी रहती है। आजीविका के स्थाई स्रोत नहीं रहते है और कई बार मान प्रतिष्ठा में भी ठेस लगती है।

11. विषधर कालसर्प योग– इस योग में राहु ग्यारहवें भाव में तथा केतु पंचम भाव में होता है तथा बाकी सांतों ग्रह इनके मध्य स्थित होते हैं इस योग के कारण जातक का जीवन विषमय हो जाता है। 11 वां भाव वैसे तो आय का है परन्तु जातक को आय के लिए भी बहुत संघर्ष करना पडता है। इस योग के कारण उच्च शिक्षा में भी बाधाएं आती है। बड़े बहिन–भाइयों से भी अनबन बनी रहती है। संतान सुख में भी कमी रहती है।

12. शेषनाग कालसर्प योग– जब द्वादश भाव में राहु और छठे भाव में केतु हो तथा बाकी सारे ग्रह उनके मध्य स्थित हो तो शेषनाग कालसर्प योग होता है। इस योग के कारण जातक नेत्र रोग से पीडित रहता है और गुप्त शत्रु जातक के खिलाफ षड़यंत्र रचते रहते हैं और नुकसान पंहुचाते रहते है। इस बजह से जातक का मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं रहता है। ❋❋❋

वास्तुशास्त्र सकारात्मक ऊर्जा का विज्ञान है

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

हजारों वर्ष पूर्व प्राचीनकाल में ही हमारे ऋषि मुनियों ने वास्तुविज्ञान की खोज कर ली थी और वास्तुशास्त्र के नियम बनाये थे। संसार में मनुष्य अपनी सुख सुविधा, सुरक्षा व जीवन में उन्नति हेतु मकान बनाता है और उसमें निवास करता है। यह आवश्यकता उसकी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हमारा शरीर भी एक प्रकार का घर है जो कि आत्मा का निवास स्थल हैं। इस शरीर रूपी घर मे रहकर जीवात्मा सुरक्षित रहती हैं। यह शरीर रूपी घर तो हमें परमात्मा स्वंय प्रदान करते है लेकिन इस संसार में रहने के लिए हमें घर स्वंय बनाना पड़ता है। घर मनुष्य के लिए स्वास्थ्यवर्धक व ब्रह्माणीय ऊर्जा से लाभान्वित कर सके, इसके लिए वास्तुनियमों का जानना जरूरी है।

वास्तु शब्द का अर्थ है– गृह निर्माण करने योग्य भूमि। वस वासे नामक धातु से वास्तु शब्द बना है और इसका अर्थ है जिसमें मनुष्य रहते है। वास्तुशास्त्र का उदगम वेदों से है। स्थापत्य वेद या वास्तुशास्त्र अथर्व वेद का एक उपवेद है। अनेक पुराणों जैसे मत्स्यपुराण, अग्निपुराण, विष्णु धर्मोत्तर पुराण इत्यादि में वास्तु के उल्लेख मिलते है। विश्वकर्मा और मय के साथ साथ अट्ठारह और ऋषि जैसे भृगु बृहस्पति, नारद, अत्रि, वशिष्ठ इत्यादि वास्तु के मुख्य प्रवर्त्तक माने गए हैं।

वास्तु विषयक शास्त्रीय ग्रंथ जैसे मानसार, मयमतम्, समरांगण सूत्रधार में वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे देश में इस शास्त्र के उद्गम एंव विकास की दृष्टि से पर्याप्त सामग्री मिलती है। वास्तुशास्त्र के सिंद्धातों के अतिरिक्त अन्य कोई नियम नहीं है, जिससे यह निश्चित किया जा सके कि कोई भवन सभी ढंग से निर्मित हैं या नहीं। इसलिए समरांगण सूत्र में यही बात इस तरह कही गई है।

वास्तुशास्त्रदूते तस्य न स्याल्लूः श्रणनिश्चयः
थस्माल्लोकस्य कृपयाशास्त्रमते दुरीर्यते।।

यह भौतिक जगत पाँच महत्वपूर्ण तत्त्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है। इन्ही तत्वों से मानव शरीर भी निर्मित है। अतः यदि उपरोक्त पाँच तत्वों का संतुलन है तो उनमें रहने वालों को स्वास्थ्य के साथ सुख शांति का भी अनुभव होता है। यह मूल तत्व वास्तुशास्त्र में निहित है। भगवान विश्वकर्मा जो कि विश्व के प्रथम स्थापति कहे गये है, ब्रह्मामा के मानस पुत्रों में से एक है। देवताओं के लिए समस्त निर्माण कार्य वे ही किया करते थे। इंद्र की नगरी अमरावती तथा समस्त देवताओं की सभाओं का निर्माण विश्वकर्मा द्वारा ही किया गया था। जब पृथ्वी का मनमाने ढंग से दोहन होने लगा तो ब्रह्मामाजी ने सम्राट पृथु को यह आदेश दिया कि वे विश्वकर्मा की सलाह लेकर निर्माण कार्य के शास्त्रीय पक्ष की रक्षा करें, और साथ ही विश्वकर्मा को यह आदेश भी दिया कि वे प्राकृतिक नियमों का ध्यान रखते हुए पृथ्वी पर निर्माण करें। संभवतः पर्यावरण की रक्षा का यह सर्वप्रथम संदेश था। वास्तु के परिप्रेक्ष्य में मयासुर का नाम भी लिया जाता है। मयासुर ने पांडवों का महल भगवान श्री कृष्ण के आग्रह पर बनाया था। श्री कृष्ण यह जानते थे, कि यह महल कौरवों द्वारा पांडवों से ले लिया जाएगा, अतः उन्हे पांडवों का यह महल अपने गुरू श्रीगर्गाचार्य से न बनाकर मयासुर से बनवाया था और उस महल के ठीक मध्य में जलाशय का निर्माण कराया था, जो कि वंशनाश का कारण होता है। इसका परिणाम सभी जानते है कि कौरवों का क्या हश्र हुआ था।

वास्तुशास्त्र का एक उदाहरण दिल्ली और आगरा के लाल किलों में देखने को मिलता है– वास्तु का नियम है कि यदि भूंखंड अथवा भवन का ईशान कोण बढ़ा हुआ हो तो वह अत्यंत शुभ होता है आगरा के लाल किले का ईशान कोण बढ़ा हुआ है और इतिहास साक्षी है कि आगरा के जिन मुगलशासकों ने राज्य किया व सभी सफल हुए। दिल्ली के लाल किले में बहुत से वास्तुदोष है। इतिहास इन शासको की असफलता का भी गवाह है।

पूर्व विद्वानों ने अपने अनुसंधान एंव अनुभवों से प्रकृति के अनेक रहस्यमयी ऊर्जाओं के संतुलन के ज्ञान के आधार पर वास्तुशास्त्र के

शेष पेज 17 पर.....

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

तिल बतायें 'हाल ए दिल'

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

चेहरे या शरीर का रंग भले ही गोरा काला अथवा सावलां हो चेहरे या शरीर पर किसी भी प्रकार के घाव आदि के चिन्ह, दाग, धब्बे आदि भले ही सौन्दर्य नाशक हों, तिल, मस्सा आदि सौन्दर्य वर्धक हुआ करते है। तिल चेहरे की सुन्दरता को द्विगुणित कर देते है। यही मान्यता है कि चेहरे पर काले तिल लोगों की वुरी नजर से रक्षा करते है।

तिल प्रायः दो रंगों के होते है, काले तथा लाल। काले रंग के तिलों से तो प्रायः सभी लोग परिचित है। काले रंग के तिल तो शरीर पर बहुतायत से पाये जाते है, किन्तु लाल तिल विरले ही होते है ये अति शुभ होते है। ये श्रेष्ठ भाग्य के सूचक होते है। काले तिलों से शुभाशुभ दोनों फलों का विचार किया जाता है। तिलमात्र सौदर्य बोध ाक ही नहीं होते वरन होने वाली घटनाओं का संकेत भी देते है। शरीर के विभिन्न अंगों पर उनकी स्थिति, उनका रंग रूप, उनकी आकृति आदि के अध्ययन से जातक के भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। इनकी स्थिति देखकर किसी भी सतोगुणी रजोगुणी और तमोगुणी प्रवृतियों का अनुमान लगाया जा सकता है। आमतौर पर शरीर के दाहिने हिस्से वाले तिल बायें हिस्से वाले तिलों से अधिक भाग्यवर्धक, लाभप्रद एंव सौभाग्यदायक होते है।

बिना रोम वाले तिल उत्तम भाग्य का संकेत देते है। यदि तिल या मस्से पर रोग हो तो हानिप्रद माने जाते है। यदि पूर्व में तिल या मस्से पर रोम न हो परन्तु कालांतर में निकल आए तो यह निकट भविष्य में हानि होने का सूचक है। अंडाकार काले तिल व्यक्ति के कमाऊ होने का संकेत देते है। गोलाकार तिल व्यक्ति के अच्छे स्वभाव का प्रतीक है। सामान्य से ज्यादा बडी आकृति के तिल सदा ग्लानि उत्पन्न करने वाले होते है। बडे तिल व्यक्ति के पराधीन होने का संकेत देते है। ये बंधक कारक होते है। चटकीले तिल मार्ग में बाधा उत्पन्न करने वाले होते है। शरीर के विभिन्न अंगो पर पाये जाने वाले तिलों के फलों का विवरण इस प्रकार है–

ललाट पर तिल– ललाट के मध्य भाग में तिल निर्मल प्रेम की निशानी है। ललाट के दाहिने तरफ का तिल किसी विषय विशेष में निपुणता, किंतु बाये तरफ का तिल फिजूल खर्ची का द्योतक होता है। ललाट या माथे के तिल के सम्बन्ध में एक मत यह भी है कि दायीं और का तिल धन वृद्धिकारक और बायीं तरफ का तिल घोर निराशापूर्ण जीवन का सूचक होता है।

गाल का तिल– गाल पर लाल तिल हो तो शुभ फल देता है बायें गाल पर कृष्ण वर्ण तिल व्यक्ति को निर्धन, दायें गाल पर धनी बनाता है।

आँख पर तिल– दायीं आँख पर तिल स्त्री से मेल होने का एंव बायीं आँख पर तिल स्त्री से अनबन होने का आभास कराते है।

भौहों पर तिल– यदि दोनो भौहों पर तिल हो तो जातक अक्सर यात्रा करता रहता है। दाहिनी भौंह पर तिल सुखमय और बायीं भौंह पर दुखमय दाम्पत्य जीवन का संकेत देता है।

मुंह पर तिल– मुखमंडल के आसपास का तिल स्त्री और पुरूष दोनों के सुखी सम्पन्न एंव सज्जन होने के सूचक होते है। मुँह पर तिल व्यक्ति को भाग्य का धनी बनाता है। उसका जीवन साथी सज्जन होता है।

नाक पर तिल– नाक पर तिल हो तो व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न और सुखी होता है। नारियों की नाक पर तिल उनके सौभाग्य का सूचक होता है।

होठ पर तिल– होठ पर तिल वाले व्यक्ति की वासना में अनुशक्ति रहती है। वह कामी होता है। यदि तिल होठ के नीचे हो तो गरीबी छाई रहती है।

कान पर तिल– कान पर तिल व्यक्ति की अल्पआयु होने का संकेत देता है।

छाती पर तिल– छाती में दाहिनी तरफ तिल का होना शुभ होता हैं स्त्री पूर्ण अनुरागिनी होती है। पुरूष भाग्य शाली होता है। शिथिलता छाई रहती है। छाती पर बायीं ओर तिल रहने से भार्या पक्ष की ओर से असहयोग की संभावना बनी रहती है। छाती के मध य का तिल सुखी जीवन दर्शाता है। यदि किसी स्त्री के हद्रय पर तिल हो तो वह सौभाग्यवती रहती है।

कमर पर तिल– कमर पर तिल हो तो व्यक्ति की जिन्दगी परेशानियों से घिरी रहती है।

पेट पर तिल– पेट पर तिल हो तो व्यक्ति चटोरा होता है। चटपटे मसालेदार भोजन का शौकीन मिष्ठान प्रेमी होता है। उसे दूसरों का खिलाने की इच्छा कम रहती है।

शेष पेज 16 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

पुत्रदा एवं षट्तिला एकादशी व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

पुत्रदा एकादशी व्रत पौष मास शुक्ल पक्ष एकादशी को होता है। इस परम पवित्र दिवस में अकारणकरूणावरूणालय सर्वान्तर्यामी परब्रह्म परमात्मा माँ लक्ष्मी के हद्रयेश्वर प्राण बल्लभ भगवान विष्णु की पूजा का विधान है। विष्णु भगवान की मूर्ति को दिव्य उच्चासन पर विराजमान कर पंचोपचार या षोडशोपचार पूजा करें। सुन्दर मधुरान्न नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, आरती करें। ब्राह्मण भोजन करायें यथा–शक्ति दान दक्षिणा भी दें। इस चर और अचर संसार में पुत्रदा एकादशी व्रत के समान कोई और दूसरा व्रत नहीं है। इसके पुण्य प्रताप से मनुष्य तपस्वी विद्वान और लक्ष्मीवान् होता है तथा सर्वगुण सम्पन्न पुत्र रत्न को प्राप्त करता है।

दिव्य सुखासन पर बैठे हुए भगवान श्रीकृष्ण से धर्मराज युधिष्ठिर ने इस व्रत के माहात्म्य के बारे में विनयानवत होकर प्रश्न किया, तब भगवान श्रीकृष्ण ने इसका विधान बतलाकर कर्णप्रिय आत्मतृप्त्यर्थ कथा पांडु पुत्र अजातशत्रु कुन्तीनन्दन धर्मराज युधिष्ठिर को श्रवण करायी–

कथा– प्राचीन काल में भद्रावती नगरी में धर्मात्मा पुण्यात्मा, दानशील, सर्वगुण विभूषित भद्रावती पुरी में सुकेतुमान् राजा राज्य करते थे। राजा की धर्मपत्नी चम्पा भी पति के अनुरूप गुणों से युक्त थीं। सम्पूर्ण राज कोष धनधान्य से पूर्ण होने पर भी राजा रानी सन्तानहीनता के कारण अत्यन्त दुःखी थे। पुत्रहीन राजा के पितर रो रोकर पिंड लेते थे और सोचा करते थे कि इसके बाद हमें कौन पिंड देगा? राजा भी पुत्र न होने कारण बंधु बांधव, धन, हाथी, घोडे, राज्य मंत्री सब कुछ होते हुए भी असंतुष्ट थे, उदास रहा करते थे। वह सर्वदा विचारशील रहते कि मेरी मृत्यु के बाद मुझको व मेरे पितरों को कौन पिंड दान देगा? बिना पुत्र के पितरों, देवताओं, ऋषियों आदि का ऋण कैसे पूर्ण होगा? इसलिए मुझे पुत्र की उत्पति के लिए प्रयत्न करना चाहिए। बड़े बड़े राजाओं ने तथा महाराज दशरथ को भी जब एक बार–

एक बार भूपति मन माहीं। मै गलानि मोरें सुत नाहीं।।
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला।।
निज दुख सुख सब गुरहिं सुनायउ। कहि वशिष्ठ बधु बिध समुझायउ।।
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारीं।।
सृंगी रिषिहि वशिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा।।

मन में ग्लानि हो गयी तो गुरू आशीर्वाद से चार चार पुत्रों को प्राप्त किया। प्रयत्न करने भी राजा को सफलता न मिली तब एक दिन राजा ने आत्महत्या करने का विचार किया परन्तु आत्मघात को महान पाप समझकर उसने ऐसा नहीं किया। राजा रानी वन में विचरण करते हुए मुनियों के आश्रम पर आए। वन में मृग, व्याघ्र, सूकर, सिंह, बन्दर, सर्प आदि भ्रमण कर रहे है। हाथी अपने बच्चों व हथिनियों के बीच धूम रहे है। आश्रम के चहुँ ओर आम्र, अशोक, बेल, देवदार, कैथ, अमरूद, आदि के वृक्ष फलीभूत है। उन पर कोयल, तोते, मैंना आदि पक्षी कलरव कर रहे है। मुनि आश्रम में संध्योपासन कर्मों में ध्यान मग्न हैं। वेद पाठ हो रहा है, कहीं यज्ञ की धूम्र से वातावरण सुगन्धित हो रहा है। आश्रम के निकट जलाशय में जल प्राणी बतख, सारस, हंस आदि विहार कर रहे है। कमल खिल रहे है। राजा ने जब यह दृश्य देखे तो उसके दाहिने अंग फड़कने लगे। राजा शुभ शकुन जानकर मुनियों को दण्डवत् प्रणाम कर रानी सहित मुनियों के सन्मुख बैठ गया, कहते है–

जब जीव परमात्मा के सन्मुख होता है तो उसके करोड़ो जन्म के पातक नष्ट हो जाते है, उसी प्रकार सन्तों के दर्शन से राजा के पाप भी नष्ट हो गए। मुनियों ने योग बल से राजा के दुःख का कारण जान लिया तथा मुनियों ने आशीर्वाद देते हुए राजा को पुत्रदा एकादशी व्रत रहने को बताया।

राजा रानी ने संकल्प सहित भगवान् विष्णु का षोड–शोपचार पूजन कर पुत्रदा एकादशी का व्रत किया। द्वादशी को व्रत का पारण किया और मुनियों को प्रणाम कर अपने महल को वापस चला आया। समयानुसार रानी ने गर्भ को धारण किया और नौ माह के पश्चात् उत्तम पुत्र रत्न पैदा हुआ। वह राजकुमार बड़ा होकर अत्यन्त वीर, धनवान, यशस्वी और प्रजापालक हुआ।

भगवान् श्री कृष्ण बोले– हे राजन् पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रदा एकादशी का व्रत करना चाहिए। जो मनुष्य इसका माहात्म्य श्रवण व पठन करते हैं उनको स्वर्ग की प्राप्ति होती है। दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों तापों से मुक्ति प्राप्त होती है। इस लोक में सम्पूर्ण सुख ऐश्वर्य को भोगता हुआ अन्त में सनातन मोक्ष को प्राप्त होता है।

षट्तिला एकादशी व्रत :– एक समय दाल्भ्य ऋषि ने काशी वासी, परम ज्ञानी, वेद वेदांगों में पारंगत, देवताओं के वन्दनीय ऋषियों के सिर मौर, गूढ़ तत्व के प्रकाशक एंव उपदेशक, श्री गिरी गोवर्धन के अनन्य प्रेमी पुलस्त्य ऋषि से पूछा कि हे भगवान! मनुष्य मृत्युलोक में ब्रह्महत्यादि महान् पाप, दूसरे के धन की चोरी, दूसरे की उन्नति देखकर ईर्ष्या आदि करते हैं परन्तु फिर भी वे नर्क नही पाते सो क्या कारण है? वह न जाने कौन सा पुण्य, दान या अल्प परिश्रम करते है। यह सब आप कृपा करके बताइये। **यह प्रश्न सुनकर पुलस्त्य ऋषि बोले हे** महाभाग आपने मुझसे अत्यन्त गम्भीर प्रश्न पूछा है इसको ब्रह्मादिक इन्द्रादि देवता भी नही जानते परन्तु मैं आपको यह गुप्त तत्व जैसा कि गोपिका बल्लभ श्री कृष्ण भगवान ने धर्मराज युधिष्ठिर को बताया था, सुनाता हूँ, आप एकाग्रचित होकर श्रवण करें। माघकृष्ण एकादशी को प्रातः स्नान करके श्री कृष्ण इस मन्त्र के 8, 28, 108 या 1000 जप करें। उपवास रखें। रात्रि में जागरण और हवन करे। भगवान का पूजन करे। और सुब्रह्मण्यनमस्तेडस्तु महापुरूषपूर्वज। गृहाणार्ध्यं मयादंत लक्ष्म्या सह जगत्पते। इस मन्त्र से अर्ध्य दें। यह षटतिला एकादशी है। इसमें

शेष पेज 19 पर.....

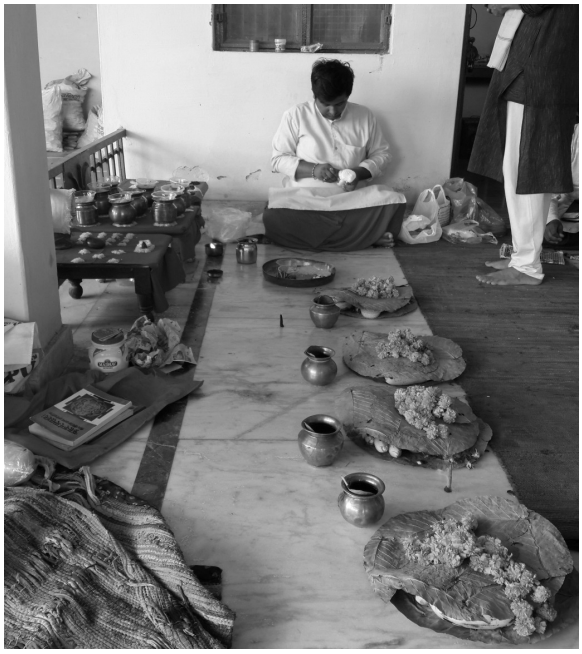

उत्तर प्रदेश का प्रथम सिद्ध श्री नाग माता मन्दिर पर कालसर्प योग की शान्ति का आयोजन प्रत्येक वर्ष में श्री नाग पंचमी पर्व एवं महाशिवरात्रि पर्व पर किया जाता हैं।

कालसर्प योग 48 वर्ष की आयु तक हर क्षेत्र (स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय, विवाह, सन्तान, पदोन्नित) में बाँधायें उत्तपन्न करता है। इसीलिये कालसर्प योग की शान्ति कराना अति आवश्यक है।

अपनी कुंडली में कालसर्प योग जानने के लिये क्लिक करें

http://www.bhavishydarshan.in/InputP2.php?OptHoro=Checked

या सम्पर्क करें

भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा।

फोनः 9719666777, 9719005262

कौन मुक्त हुआ श्राप से शिवरात्रि के दिन

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन ही शिव भक्त शिवजी की उपासना क्यों करते है, इस सम्बन्ध में कई पौराणिक आख्यान प्रसिद्ध है। स्कंदपुराण में एक विधवा ब्राह्मणी की कथा आती है। वह बहुत चंचल और कामासक्त रहा करती थी। अपने मन पर उसका कोई अधिकार नहीं था। एक समय उसने दुर्बुद्धि चाण्डाल के सम्मुख समर्पण कर दिया और फलस्वरूप उसने एक दुरात्मा चाण्डाल पुत्र को जन्म दिया। इस बालक का नाम दुस्सह था।

यह बालक पाप कर्मो में ही प्रवृत्त रहता था। जुआ खेलना, शराब पीना, सोने की चोरी करना आदि महान पाप कर्मो को वह कुछ गिनता ही नही था। दैवयोग से एक दिन वह माघ कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में चोरी के उद्देश्य से एक शिव मंदिर में घुस गया। वहाँ भगवान शिव का पूजन चल रहा था। अनेक शिव भक्त, जिन्होने दिन भर उपवास किया था, बिल्व पत्र और गंगाजल चढ़ाकर शिवजी का पूजन कर रहे थे। साथ ही शैव शास्त्र की कथा भी हो रही थी।

सहसा उस बालक ने चोरी करने का विचार छोड़ दिया और कथा सुनता रहा। इसी शुभ कर्म के परिणाम स्वरूप उसे शिवजी का दर्शन हुआ और वह पुण्य योनि प्राप्त करके बहुत दिनों तक पुण्यात्माओं के लोक में सुख भोगता रहा। तदन्तर वही राजा चित्रांगन का पुत्र हुआ और सायुज्य होने के बाद वही वीरभद्र नाम का शिवजी का गण हुआ।

एक और इतिहास के अनुसार एक व्याघ्र ने माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन अनायास भगवान शंकर को बिल्व पत्र और अश्रुजल भेंट कर भव बन्धन से मुक्ति पा ली थी। वह व्याघ्र दिन भर चिड़ियों की घात में लगा रहा और संध्या आने पर अपने ग्राम में न लौट सका क्योकि जंगल में भटक गया था। सिंह की गर्जना उसके कानों में पड़ी और वह घबराकर एक वृक्ष पर चढ़ गया। वृक्ष बिल्व पत्र का था और उसके नीचे ही एक प्राचीन शिवलिंग भी प्रतिष्ठित था। भय से त्रस्त व्याघ्र अपने अन्धकारमय भविष्य की कल्पना कर रो पडा। अश्रुकण नीचे शिवलिंग पर टपकते रहे और कुछ बिल्व पत्र भी उसके भार से टूटकर शिव का श्रंगार बने। स्वात्माराम भोले बाबा अनायास ही प्रसन्न हुए और उस व्याघ्र को दुर्लभ शिवलोक प्राप्त करा दिया।

ऐसा भी कहा जाता है कि समुद्र मंथन करते समय जब हलाहल विष प्रकट हुआ और सम्पूर्ण बह्माण्ड भर में अकाल से मृत्युग्रास बनने की स्थिति उत्पन्न हो गई तब नारद जी ने देवताओं को पुकार कर कहा हे अदिति कुमारो! अब समुद्र का मंथन नही करो। इस समय यदि भगवान शंकर को प्रसन्न नहीं किया तो तीनो लोक भस्म हो जायेगें। जब कालकूट विष से देव और दैत्य दोनो के ही प्राण संकुचित होने लगे तब समाधिस्थ शिव को प्रसन्न करने के लिए देवताओं ने शिवलिंग स्थापित कर रात्रि भर गंगाजल से उसका अभिषेक किया।

शेष पेज 18 पर.....

नववर्ष में कुछ नया करें

सुरेश अग्रवाल
आगरा

जब जागो तभी सबेरा, फिर हम सबेरा होने की प्रतीक्षा क्यों करें? आधुनिक युग में कुछ करने के हजारों अवसर उपलब्ध हैं, बस जरूरत है कल्याण कारी अवसरों को तलाश करने की। आइये, हम नववर्ष में कुछ नया करें– नई सोच विकसित करें। नवीनता में कुछ बनाने की सम्भावनाएँ छिपी होती हैं, जिसे पाकर एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति में असीम ऊर्जा के साथ समाज को नई दिशा देने की सामर्थ्य पैदा हो सकती है।

कोई भी व्यक्ति कर्म किए बिना नहीं रह सकता है, तो क्यों न हम सत्कर्म करें। मोटे रूप से सभी जानते हैं कि कौन से कर्म अच्छे हैं और कौन से बुरे हैं, शास्त्र और धार्मिक ग्रंथ हमें सत्कर्मो की जानकारी देते हैं– हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। सत्कर्म का बीज कभी नष्ट नहीं होता है, बल्कि इससे अपना तो भला होता ही है, दूसरों का भी भला होता है। सत्कर्म करने वालों की ही समाज प्रशंसा करता है और उनसे सतत् कर्म करते रहने की अपेक्षा करता है। हमारे जीवन में सुअवसर तो निरन्तर आते रहते है, किन्तु या तो हम वहाँ उस समय उपलब्ध ही नहीं होते या फिर सोते रहते हैं। इसलिए सदैव सजग रहें और पूरी तरह से तैयार, ताकि हम उन अवसरों का पूरा पूरा उपयोग कर सके। कुछ व्यक्ति कार्य तो प्रारम्भ कर देते हैं, किन्तु जब रूकावटों का सामना होता है, तो भाग खड़े होते हैं। ये दोनों तरह के व्यक्ति जीवन में सफल नहीं हो पाते हैं।

उपलब्धियाँ उन्हीं के चरण चूमती हैं, जो सदैव प्रयास रत रहते हैं। जिनके कार्या में जितनी बाधाएँ आती है, उतनी ही ज्यादा तत्परता और उत्साह से वे अपने कार्य को पूरा करने के लिए अन्तिम क्षण तक जुटे रहते हैं। हम सदैव खिन्नं और उदास ही रहेंगें, तो हम मार्ग में आई हुई बाधाओं का समाधान कैसे ढूँढ पायेगे? परेशानियों में ही हल खोजेंगे, तभी सफल और रचनात्मक सत्कर्म कर सकेंगें।ईश्वर हमसे प्राकृतिक नियमों के पालन की अपेक्षा रखता है। उसके विधान का पालन करना आनिवार्य है। यदि हम आज्ञाकारी, विनम्र तथा परिश्रमी होकर उसकी व्यवस्था में सहयोग करते है, तो वह हमें अपना उत्तराधिकारी बना देता है। अपनी रूचि व प्रतिभा को समझकर, अपने दिमाग को खुला रखकर अपने समाज के प्रति सजग रह सकेंगें।

आज विश्व में समाज सेवा के अनेक क्षेत्र उपलब्ध हैं, बस कमी है योग्य व्यक्तित्व की। उसके लिए अपनी प्रतिभा को परखकर हमें, सेवा प्रकल्प का चयन करना होगा, ताकि हम उस क्षेत्र में विशिष्टता हासिल कर सकें और समाज में अपनी पहचान बना सकें। संदेह, डर व कमजोरी पर से ध्यान हटाकर सत्कर्मों में सौ फीसदी ध्यान लगाना ही ईश्वरीय इच्छा में हाँ में हाँ मिलाने जैसा है। क्या पता आपकी सफलता की शुरूआत यहीं से हो। ❋❋❋

वायु मुद्रा

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

हमारा शरीर पांच तत्वो से बना है, अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश किसी भी तत्व की न्यूनता या अधिकता होने पर उससे सम्बन्धित विकार शरीर में उत्पन्न होते है, सभी तत्व महत्वपूर्ण है परंतु वायु तत्व का विशेष महत्व है। समाज में अधिकांशतः व्यक्ति वायु विकार से पीड़ित है जिसके कारण जोड़ो में दर्द आदि अनेको बीमारियां बढ़ रही है। मुद्रा विज्ञान में वायु विकारों को दूर करने के लिए वायु मुद्रा का वर्णन है–

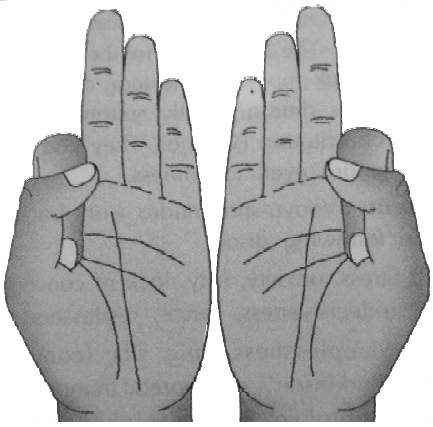

विधि– वायु मुद्रा को करने के लिए प्रातः व सायं काल में किसी भी आसन में बैठकर अपनी तर्जनी उँगली को मोडकर अगुठे के मूल में लगायें तथा अंगूठे से तर्जनी उंगली पर दबाब बनायें व अन्य तीनों उंगलियों को स्वतंत्र कर दें तथा शुद्ध वायु को ग्रहण करें। मन व चित्त को शांत रखें, भोजन का निश्चित समय बनायें व निश्चित मात्रा में करें। गरिष्ठ भोजन न करें, उडद, राजमा, भिण्डी, फूल गोभी, अरवी, मटर आदि वायु कारक दाल सब्जियों का त्याग करें, विशेष तौर पर रात्रि काल में न खायें। शाकाहारी बनें। सप्ताह में एक दिन उपवास करें व जल अधिक पियें, नियमित अधिक से अधिक सामर्थ्य अनुसार पैदल चलें।

लाभ– इस मुद्रा से कब्ज आदि में लाभ होता है। जोडो के दर्द, मासपेशियों के दर्द, आदि में लाभ होता है। यह मुद्रा शरीर में सूजन, कम्पन, अथवा रक्त संचार को ठीक रखती है। गठिया आदि रोगो के लिये यह मुद्रा विशेष लाभकारी है। वायु से होने वाले समस्त विकारों को यह मुद्रा लाभ पहुँचाती है।

नोट– यह मुद्रा 30 मिनट से ऊपर आवश्कतानुसार कर सकते है। ❋❋❋

Kemdrum Yog

Varun Gupta
Vastu Ratan

Kemdrum yog is one of the most malicious yog. In experience, people with this yog, lack in at least one aspect of life "kisi ek sukh se vanchit", be it health, money, wife, children, education & stability etc. This deficiency in their life is so acute that it makes their life miserable.

Formation:

1. In the lagna kundali, neither no planet with moon, nor any planet in either side houses i.e. 12th and the 2nd to the moon(rahu and ketu will not be counted).

2. In the lagna kundali, no planet in Kendra houses(1st, 4th, 7th and 10th)(sun, rahu and ketu will not be counted).

3. In the lagna kundali, no planet aspecting the moon. If such a complete kemdrum exists in any kundali, the person, even, if born to a kingly family, would still become a 'daridra, deen and dukhi' and will face insurmountable obstacles in life.

Upaya

Sharing a traditional folk upaya for this yog. You will need a blood relation to assist you in doing this upaya. The upaya should be done at the bank of a river or at the sea shore, in the morning, after the sun rise, on a Saturday.

Take whole 11 suparis(arrica nut), a red flower and Rs 1.25 in coins. Tie these things in a handkerchief size black cloth. Make the person with Kemdrum yog sit facing east and the blood relation , who has gone along to assist , should take the potli in his hand and rotate this potli, anticlockwise, seven times around the body of the one who has the Kemdrum yog.

Start the round from the left side of the chest. After having made the round, immerse the potli either in a river or in sea.

Note: When you leave the house for the upaya, none of the two people should look back. Nor should they look back, towards the river / sea after throwing the potli till they reach home. The person assisting stands behind the person having Kemdrum yog. he should neither stand in front of the person nor such that he gets between the water and the kemdrum person. If necessary he can stand by the side. ❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

मासिक राशिफल

16 दिसम्बर - 15 जनवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ताऐं बनी रहेगी। आपको अपनो का सहयोग मिलेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। वृथाविवाद से दूर रहें। इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगे। क्रोध में निरन्तर वृद्धि होगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– कारोबार या व्यवसाय व नौकरी में भी कुछ रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा। आपको राज भय रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा। रक्त–पित्त जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई–नई योजनाओं से लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते–इस मास में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। आपको प्रियजनों का सुख एवं साथ मिलेगा। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। मानसिक तनाव अधिक रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– अपने भाइओं से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- प्रियजनों में से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा। कारोबार, व्यवसाय ठीक चलेगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। घरेलू परेशानियों की वृद्धि होगी। इस मास में स्वास्थ्य ठीक–ठीक रहेगा। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

दिसम्बर	जनवरी
18.सफला एकादशी व्रत **19**.प्रदोष व्रत, स्वरूपी द्वादशी **22**.अमावस्या **23**.अन्नपूर्णा जयंती, किसान दिवस **25**.श्री विनायक चतुर्थी, ईसा मसीह जयंती (क्रिश्चियन डे), पं. मदनमोहन मालवीय जयंती **29**.दुर्गाष्टमी	**1.**पुत्रदा एकादशी व्रत, नववर्ष प्रारम्भ (अंग्रेजी) **2.**प्रदोष व्रत **4.**पूर्णिमा व्रत **5.**पूर्णिमा (स्नान–दान), गुरु गोविन्द सिंह जयंती **9.**संकट चौथ **11.**श्री लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस **12.**स्वामी विवेकानन्द जं. तिथि, श्री रामानन्दाचार्य जं. **13.**कालाष्टमी, लोहड़ी **14.**मकर संक्रान्ति **15.**भारतीय थल सेना दिवस

गृहारम्भ मुहूर्त

दिसम्बर –नही है। **जनवरी**– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

दिसम्बर – नही हैं। **जनवरी**– नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

दिसम्बर – 24, 26, 28, 29, 31

जनवरी– 3,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

दिसम्बर – 17, 24, 31

जनवरी– 7, 12,

सर्वार्थ सिद्ध योग

दिसम्बर	जनवरी
19 ता. 22:48 से 31:00 तक 21 ता. 20:55 से 31:01 तक 28 ता. 7:38 से 31:04 तक 30 ता. 5:55 से 31:05 तक	02 ता. सू.उ. से 30:50 तक 11 ता. सू.उ. से 25:41 तक

16 जनवरी - 15 फरवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस मास में हानि होने का भय रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी लगी रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे। मानसिक तनाव से बचें। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। पिता का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। बहिनों का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–इस मास में गुप्त शत्रु से बचें। अपमान होने का भय रहेगा। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव होने की स्थिति बनेगी। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस मास में लाभ होकर हानि का भय रहेगा। अच्छे लोगों से मेल-जोल बढ़ेंगे स्वास्थ्य खराब रहेगा। नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जनवरी	फरवरी
16.षटतिला एकादशी व्रत **18.**मास शिवरात्रि **20.**मौनी अमावस्या **21.**श्री बल्लभ जयंती **23.**गौरी तृतीया, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती **24.**बसंत पंचमी, सरस्वती जयंती **25.**दारिद्रहरण षष्ठी **26.**आरोग्य सप्तमी, शिवाजी जयंती, भारतीय गणतंत्र दिवस **27.**भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी **28.**लाला लाजपत राय जयंती **30.** जया एकादशी व्रत, महात्मा गांधी पुण्य **31.**भीष्म द्वादशी	**1.**प्रदोष व्रत **3.**पूर्णिमा स्नान समाप्त, संत रविदास जयंती **7.** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **12.** सीताष्टमी (जानकी जयंती), श्री दीनबंधु इण्ड्रयूज जयंती **13.**श्री राम दास जं., **14.**स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती, वेलेन्टाइन डे **15.**विजया एकादशी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

जनवरी– 22, 26, 30, 31
फरवरी– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

जनवरी– 22, 23, 26, 30, 31
फरवरी – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

जनवरी– 22, 24, 26, 30, 31
फरवरी – नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त

जनवरी– 22, 23, 26, 30 **फरवरी**– नही है।

सर्वार्थ सिद्ध योग

जनवरी	फरवरी
16 ता. 8:47 से 31:05 तक 18 ता. 7:34 से 31:06 तक 25 ता. सू.उ. से 12:58 तक 27 ता. सू.उ. से 11:11 तक 28 ता. 11:08 से 31:01 तक	02 ता. 18:02 से 31:00 तक 03 ता. 20:31 से 31:01 तक 08 ता. सू.उ. से 29:58 तक 12 ता. 17:26 से 30:55 तक 13 ता. सू.उ. से 17:57 तक 15 ता. सू.उ. से 16:29 तक

मौके का फायदा

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

कौडिन्य बोला, ठीक है। इतना कहकर उस ब्राह्मण ने मुझे श्राप दिया–आज से तू मेढको ं को वाहन होगा।

उसकी स्थिति देखकर कपिल बोला तुम अभी शोकग्रस्त हो इसलिए उपदेश को ग्रहण करने में असमर्थ हो, तो भी जो करना चाहिए वो सुनों। संग तो सर्वथा त्यागना चाहिए और जो वह नहीं छोड़ा जाए जो सज्जनों के साथ संग करना चाहिए। सज्जनों की संगति ही एकमात्र औषधि है जो सांसारिक रोगों से मुक्त कराती है।

कौडिन्य की शोकाग्नि कपिल के उपदेशों की अमृत धारा से शान्त हो गई और फिर उसने विधि–विधान से सन्यास ले लिया।

इतना कहकर सांप मेढक से बोला, उसी ब्राह्मण के श्राप–प्रभाव के कारण ही मेंढकों को ही पीठ पर चढ़ाने के लिए बैठा हूं।

सांप की बात सुनकर मेंढक ने अपने राजा को सारी बात बतला दी। वह अपने साथी मेंढ़को को लेकर सांप की पीठ पर चढ़ गया। आहा! कितना मजा आ रहा है। नाग देवता की पीठ पर। एक मेढ़क कह रहा था एक मेंढकी उछलकर सांप की पीठ पर चढी तो एक मेंढ़क ने उससे कहा, देवी जी, जरा सम्भलकर चढ़ो, कही तुम्हारा पैर न फिसल जाए। मेंढकी गर्भवती थी। वह भी सांप की सवारी करने के लिए घर से आ गयी थी। उसका पति उसे बहुत मना कर रहा था। कि वह वहां न जाए, परन्तु मेंढकी जिद करके कि वह भी अपने जीवन में सांप की सवारी करके देख लें, पता नहीं कल जीवन रहे न रहे।

सांप भी मेंढ़को को पीठ पर बिठाकर तरह–तरह की चाल चल रहा था कभी लहराकर तो कभी सीधा सीधा, कभी दाएं तो कभी बाएं। वह अपनी विचित्र चाल से मेंढ़कों को सैर करा रहा था। शाम हो गयी थी सैर करते करते। सांप ने मेढ़को से कहा, आप लोग अब अपने अपने घर वापस जाएं, कल फिर मैं यही आप लोगों का इन्तजार करूंगा।

अगले दिन वह धीमी चाल से चलने लगा। उसे इस तरह से धीमी चाल से चलते देख मेंढको का राजा बोला, सांप देवता। आज आप इतनी धीमी गति से क्यों चल रहे हों?

सांप ने कहा, महाराज! भूखा होने के कारण मैं शक्तिहीन हो गया हूं, इसलिए मैं तेज चलने में असमर्थ हूं। तब मेंढकों के स्वामी ने कहा, तुम हमारी आज्ञा से भूख लगने पर मेढको को खा लिया करो और हमें सैर कराया करो।

फिर क्या था– सांप तो इसी दिन के लिए मेंढ़कों को सैर कराता रहा था कि मेंढकों का राजा स्वंय कहे कि वह मेढ़क खा लिया करे। सांप ने धीरे–धीरे सभी मेढ़को को खा लिया, फिर एक दिन जब सारे मेंढक समाप्त हो गये तो उसने मेंढ़को के स्वामी पर भी हाथ साफ कर दिया वह उसे भी खा गया।

कथा सुनाकर कौआ बोला, इसिलिए मैं कहता हूं कि काम पड़ने पर मौके का फायदा अवश्य उठाना चाहिए। वैसे भी पुरानी कहानियां व्यर्थ हैं। मूल बात यह है कि राजा हिरण्यगर्भ के साथ सन्धि कर लेनी चाहिए, वह इसी योग्य है और यही मेरी भी राय है। कौए को यहां यदि डर था तो केवल गिद्ध का था, क्योकि वही उसकी जाति का था अन्यथा, उसने वहां उपस्थित सभी पक्षियों का बेवकूफ बना दिया था।

सही कहा है किसी ने गद्दार की जवान का विश्वास नहीं करना चाहिए। न जाने कब वह अपनी बात से मुकर जाए और अपने साथी को फंदे में फंसा दे। कौआ अपने सीधे–सादे राजा हिरण्यगर्भ के साथ गद्दारी कर चुका था। इस बात को चित्रवर्ण के सभी सैनिक जानते थे। वे तो मेघवर्ण कौए पर विश्वास करने को तैयार नहीं थे।कौए की ऐसी बात सुनकर राजा चित्रवर्ण बोला, महाराज! यह तुम कैसी सलाह दे रहे हो? इसको तो हम जीत चुके है। यदि वह हमारी सेवा में रहना चाहे तो रहे वरना युद्ध किया जाये।

तभी जम्बूद्वीप से आकर तोते ने कहा, महाराज! सिंहलद्वीप का राजा सारस जम्बूद्वीप को घेरे हुए है।

तोते की बात सुनकर राजा हिरण्यगर्भ घबराकर बोला, क्या? तोते ने पहली बात पुनः कह दी। मन्त्री गिद्ध ने मन में सोचा, अरे चकवे, तुम सर्वज्ञ हो। तुम धन्य हो। राजा झुंझलाकर बोला, मैं जाकर उसी का समूल नाश कर दूंगा। मेरा ही नमक खाया और मुझे ही आंख दिखाने लगा नमकहराम! राजा को और अधिक क्रोध आ रहा था। वह कह रहा था– देखा तुमने, उसने अपने सेनापतियों की तरफ इशारा करते हुए कहा, जिसको दया का पात्र

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

समझा वही कुछ दिनों में कठोर बन जाता है। क्या उसे ऐसा करना चाहिए था? क्या उसे हमारे एक भी अहसान की याद नहीं आई– अरे! कितने अहसान किये हमने उस पर। अपने आप बिना किसी को सम्बोधित करके कह रहा था। वहां उपस्थित सभी सेनापति आदि चुपचाप अपने राजा के क्रोध को देख रहे थे। वे करते भी क्या? उनमें गिद्ध मन्त्री ही राजा को कुछ सुझाव दे सकता था किसी अन्य की तो इस समय बोलने की हिम्मत ही न थी। उसी ने हिम्मत करके कहा, शरद ऋतु की तरह मेघ गर्जना नहीं करनी चाहिए। गिद्ध राजा को समझाने का प्रयास करने लगा था। वह जानता था कि राजा और अधिक क्रोध में कुछ कर बैठा तो उसके साथ हमारी भी खैर नहीं है। वह तो मरेगा ही, मगर हमें अपने साथ लेकर मरेगा। वह कहने लगा, महापुरूष यदि किसी का भला बुरा करते हैं तो घर बैठकर बेकार में डींगे नहीं हांकते। गिद्ध सोच रहा था, यदि चित्रवर्ण ने जम्बूद्वीप जाकर सारस से युद्ध शुरू कर दिया तो हमारी सेना एक तो यहां थकी–हारी है ही, वहां जाकर तो उसे हार का मुंह देखना निश्चित हो जाएगा और यदि पीछे से राजा हिरण्यगर्भ ने भी हमला कर दिया, क्योकि उसे भी अपनी इस ताजी हार का बदला लेने का अच्छा मौका मिल जाएगा तो राजा चित्रवर्ण दोनों तरफ से मारा जाएगा। इसमें तो हमारा ही अधिक नुकसान होगा। इसका कारण यही माना जाएगा कि कितना भी बलशाली हो, दो के सामने नहीं टिक सकता। यही सोचकर गिद्ध ने अपने राजा चित्रवर्ण को सुझाव पे सुझाव देने शुरू कर दिये थे– उसने कहा, राजन! एक साथ कई शत्रुओ के साथ नहीं लड़ा जा सकता। सांप कितना ही फुंकारे, यदि एक साथ नन्हीं–नन्हीं चीटियां उसके शरीर को खाना शुरू करें तो घमण्डी सांप भी मर जाता है। तो तुम मुझे डरा रहे हो, गिद्ध महाराज! राजा चित्रवर्ण बोला, यदि हमारी मौत इसी तरह आनी है, तो आएगी ही। यदि कोई मनुष्य मौत से डरकर अपने घर से ही न निकले, तो क्या उसको मौत नहीं आएगी। राजा ने कहा। नहीं महाराज! मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा है और न मेरा मतलब ये सब बातें कहने का था। बल्कि मैं तो यह कह रहा था कि क्या सन्धि किए बिना अपने देश पहुंचकर शत्रु से युद्ध करना उचित है? यह हमारे ऊपर पीछे से चढाई कर देगा। शास्त्र भी कहते हैं जो बात की तह में गए बिना क्रोध करता है, वह मूर्ख ब्राह्मण की तरह पछताता है। यह सुनकर चित्रवर्ण बोला, यह कौन–सी कथा है? दूरदर्शी नामक गिद्ध ने कहा, सुनिए महाराज! मैं कहता हूं।

❋❋❋

शेष पेज 4 से आगे.....

सतनाज और दो लडडु, फल और काला कोयला और कील रख के ठीक 12 बजे दोपहर को डाकोत को देने से (कम से कम 21 शनिवार ऐसा करने से) शनि दोष मे लाभ होता है।

उपरोक्त उपाय छोटे–छोटे है लेकिन पूर्ण रूप से सार्थक हैं। इनको उपयोग में लेने पर शनि महाराज अपनी कुदृष्टि का प्रभाव कम कर देते है। हमें उनके कोप का भाजन तो बनना पडता है, लेकिन मात्र आंशिक रूप से। ऐसे उपाय करने से शनि हम पर प्रसन्न होता है और हमारा कल्याण भी करता है। अतः हमें चाहिये कि जीवन में इन छोटे छोटे मगर पूर्ण प्रभावी उपायों को उपयोग में लायें न कि शनि भगवान से डर कर बैठ जायें। ❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

दाहिनी भुजा पर तिल– ऐसे तिल वाला जातक प्रतिष्ठित व बुद्धिमान होता है। लोग उसका आदर करते है।

बायीं भुजा पर तिल– बायीं भुजा पर तिल हो तो व्यक्ति झगडालू होता है। उसका सर्वत्र निरादर होता है। उसकी बुद्धि कुत्सित होती है।

पुतली पर तिल– दायीं पुतली पर तिल हो तो व्यक्ति के विचार उच्च होते है। बायीं पुतली पर तिल वालों के कुत्सित होते है। पुतली पर तिल वाले लोग सामान्यता भावुक हुआ करते है।

पलकों पर तिल– आँख की पलकों पर तिल हो तो जातक संवदेनशील होता है। दायें बायें के भेद से संवेदनशीलता ज्यादा या कम होती हैं।

ठोड़ी पर तिल– जिस स्त्री की ठोड़ी पर तिल हो तो उसमें मिलन सारिता की कमी होती है।

जबड़े पर तिल– जबडे का तिल हो तो स्वास्थ्य अनुकूलता प्रतिकूलता बनी रहती है।

कुहनी पर तिल– कुहनी पर तिल का पाया जाना विद्वता का सूचक है।

कंधों पर तिल– दायें बायें के भेद से कंधे पर तिल का होना दृढ़ता अथवा तुनक मिजाजी का सूचक है।

घुटनों पर तिल– दाहिने घुटने पर तिल होने से गृहस्थ जीवन सुखमय और बायें पर होने से दाम्पत्य जीवन दुखमय होता है।

पैरो पर तिल– पैरों पर तिल हो तों जीवन में भटकाव रहता है। किन्तु यात्राओं का शौकीन होता है। दायें पैर पर तिल हो तो यात्राएं सोद्देश्य और बायें पर हो तो निरूद्देश्य होती है।

पीठ पर तिल– पीठ पर तिल हो जातक भौतिकवादी, महत्वाकांक्षी एंव रोमांटिक हो सकता है। यह भ्रमणशील भी हो सकता है। ऐसे लोग धनोपार्जन भी खूब करते है। और खर्च भी खुल कर करते है। वायु तत्व के होने के कारण ये धन संचय नहीं कर पाते।

हाथों पर तिल– जिसके हाथों पर तिल होते है, वह चालाक होता है। गुरू के क्षेत्र में तिल हो तो सन्मार्गी होता है। दायीं हथेली पर तिल हो तो बलवान और दायीं हथेली के पृष्ठ भाग में हो तो धनवान होता है। बायीं हथेली पर तिल हो तो जातक खर्चीला तथा बायी हथेली की पीाठ पर तिल हो तो कंजूस होता है।

अंगूठे पर तिल– अंगूठे पर तिल हो तो व्यक्ति कार्यकुशल, व्यवहार कुशल तथा न्यायप्रिय होता है।

तर्जनी पर तिल– जिनकी तर्जनी पर तिल हो तो वह विद्यावान, गुणवान और घनवान किंतु शत्रुओं से पीड़ित होता है।

मध्यमा पर तिल– मध्यमा पर तिल उत्तम फलप्रद होता है व्यक्ति सुखी होता है। उसका जीवन शांतिपूर्ण होता है।

अनामिका पर तिल– जिसकी अनामिका पर तिल हो वह ज्ञानी, यशस्वी, धनी और पराक्रमी होता है।

कनिष्ठिका पर तिल– कनिष्ठिका पर तिल हो तो व्यक्ति संपत्तिवान होता है, किंतु उसका जीवन दुखमय होता है।

इस प्रकार शरीर के अलग अलग अंगों पर तिल के फल अलग अलग होते है। किन्तु बारह से ज्यादा तिल अच्छे नहीं होते है। बारह से कम तिलों का होना शुभ होता है। दाहिनी तरफ वाले तिल अपेक्षा कृत शुभ एंव लाभकारी माने गये है।

❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

नियमों को बनाया था। पंचमहाभूतों के निर्माण के सम्बंध में उनका मानना है कि आकाश से वायु ,वायु से जल, जल से अग्नि और अग्नि से पृथ्वी का निर्माण हुआ है। वास्तुशास्त्र के नियमों के मूल में इन सभी ऊर्जाओं का समावेश है जिनका विभिन्न दिशाओं से विकरण एंव उत्सर्जन होता है।

इस ब्रहमांड में चुंबकीय ऊर्जा का प्रवाह मुख्यतः उत्तर से दक्षिण की ओर रहता है। आकाश से अंतरिक्षीय ऊर्जाएं प्राप्त होती हैं। पूर्व से सूर्य ऊर्जा प्राप्त होती है जो कि प्राणियों के प्राणों का मूल स्त्रोत है। सूर्योदय के साथ ही पूर्ण संसार में प्राणाग्नि का संचार होता है, स्वर विज्ञान में प्राण वायु ही आत्मा माना गया है उपयुक्त समस्त ऊर्जाओं के संतुलन के लिए हमारे प्राचीन विद्वानों ने ईश्वरीय प्रकृति की रचना के मूल सिंद्वातों को जानने का प्रयास किया, जिससे उन्हे ज्ञात हुआ कि इस भौतिक जगत का निर्माण एक निश्चित गणितीय माप व आकार के अन्तर्गत हुआ तथा समस्त प्रकार की ऊर्जाओं का प्रभाव निर्धारित समयानुसार संपन्न होता है जिसमें कहीं भी कोई भेदभाव नहीं है। मानव, जीव, जंतु, पशु, पक्षी, वृक्ष एंव वनस्पति सभी निश्चित माप में, आकार में, निर्धारित तंत्रिका के अंतर्गत बने है उनके पोषण, उनकी वंश वृद्धि की समुचित विराट व्यवस्था प्रकृति में विद्यमान है। वास्तुशास्त्रियों ने अपने दीर्घकालीन अनुसंधानों, अनुभवों के आधार पर इन्ही सारी विधाओं एंव प्राकृतिक रहस्यों को वास्तुशास्त्र के नियमों का मूल आधार माना है। वास्तुशास्त्र को भारतीय संस्कृति में चौसठ महत्वपूर्ण विधाओं में से एक माना गया है, जिसका मूल स्त्रोत वेद है। वैदिक काल में वास्तु विद्या का विकास ब्राहमण, आरण्यक, उपनिषद् एंव पौराणिक काल में हुआ। इसके वाद उत्तर वैदिक काल, जिसे रामायण एंव महाभारत काल भी कहते है, में वास्तुशास्त्र का और विस्तार हुआ। अयोघ्या नगरी, लंका नगरी, द्वारका एंव हस्तिनापुर आदि की स्थापत्य कला अपने चरमोत्कर्ष पर थी। उनकी सुंदरता एंव निर्माण कला अनुपम एंव अद्वितीय थी। अयोध या के निर्माता भगवान मनु थे, जबकि अन्य नगरों के विश्वकर्मा व गये थे। इसके वाद छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक इसका विकास अधिक नहीं हुआ क्योकि चौथी शताब्दी में सिंकदर के आक्रमण के बाद भारतीय संस्कृति को भारी क्षति हुई। इसके बाद चाणक्यकाल मे वास्तु शास्त्र को नया आधार मिला। इस काल में बड़े बड़े भवनों दुर्गो, सभागारों, अस्त्रालयों, पूजाघरों, अतिथि शालाओं आदि को नया स्वरूप प्रदान किया गया। वास्तुशास्त्र का यह ज्ञान केवल भारत देश तक सीमित नहीं था बल्कि विश्व के कोने कोने में लोग इसके सिद्वांतो का पालन करते थे और इस शास्त्र को विभिन्न नामेां से पुकारते है। लैटिन में वास्तुशास्त्र को जियोमेंशिया कहा जाता है अरब में इसे रेत का शास्त्र कहते है, तिब्वत में वास्तुशास्त्र को बगुवा तंत्र कहते है और दक्षिण पूर्व एशिया में वास्तुशास्त्र को फेंगशुई कहते है। आज विश्व में लोग वास्तुशास्त्र के नियमों,सिद्वातों व प्रभावों को स्वीकारते है।

एक यूरोपीय वास्तुविद् ने सारे संसार की वास्तुकला के अध्ययन के बाद अपना मत प्रकट किया कि किसी भी देश की संस्कृति और उसके राष्ट्रीय चरित्र की झलक उस देश की स्थापत्य कला के आंकलन से जानी जा सकती है। जैसे–ग्रीस की वास्तुकला में सैनिक अनुशासन की झलक मिलती है। इटली की वास्तुकला में नजाकत, सुन्दरता और मानवीय ऊर्जा को अनुभव किया जा सकता है। भारतीय वास्तुकला में ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना, सुन्दरता का गूढ ज्ञान और प्रकृति के संतुलन का ज्ञान झलकता है। जो संसार में अपने आप में संपूर्ण है। भारतीय वास्तु कला का लक्ष्य परम तत्व की अनुभूति है। इसे समझने के लिए स्कूल नहीं सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता है। वास्तुशास्त्र के सिद्धांतो में एक वास्तु पुरूष को कल्पना की गई है, जो एक भूखंड पर निर्मित भवन का अधिष्ठाता होता है। अनेक शोधों एंव परीक्षणों से यह ज्ञात होता है। कि जो तत्व पृथ्वी के वृहद आकार में हैं, वही तत्व एक छोटे भूखंड में भी पाया जाता है। जब किसी भूंखड के चारों ओर दीवार बनाकर भवन निर्मित होता है, तो ऐसे स्थल में एक निश्चित ऊर्जा एंव अंतरिक्ष की अनेक शक्तिँया विद्यमान हो जाती है, जिसका संतुलन भवन में करना आवश्यक होता है। अतः इसी को एक सिद्वांत के रूप में विकसित करने के लिए वास्तुपुरूष की परिकल्पना कर पददेवता विन्यास का सिद्वांत प्रति पादित किया गया है।

हमारे ऋषि मुनियों को ब्रहमाण्ड से आने वाली ऊर्जाओं का ज्ञान था। वास्तु के नियम है कि उत्तर और पूर्व में निर्माण हलका होना चाहिए, दक्षिण और पश्चिम में भारी। इसका मुख्य कारण है कि उत्तर और पूर्व से सौर ऊर्जा का समुचित प्रवेश हो और दक्षिण और पश्चिम का भारी निर्माण इस ऊर्जा का ह्रास होने से बचा सके और यह ऊर्जा घर और घर के सदस्यों को स्वस्थ रख सके। एक और वास्तु नियम यह है कि सोते समय सिर दक्षिण की और होना चाहिए

वैज्ञानिक तथ्य है कि चुम्बकीय क्षेत्र उत्तर से दक्षिण की और प्रवाहित होता है। हमारे शरीर में चुंबकीय क्षेत्र सिर से पैर की ओर प्रवाहित होता है। दक्षिण में सिर और उत्तर में पैर करने से ऊर्जा का चक्र पूरा हो जाता है। इस ऊर्जा से मानव मस्तिष्क की लाखों कोशिकाएँ तीव्रगति से सक्रिय हो जाती है इससे गहरी नींद आती है और तन मन दोनो स्वस्थ हो जाते है।

इस तरह वास्तुशास्त्र सम्पूर्ण विज्ञान है और यदि इसके सिंद्वातों व नियमों को अपनाया जाए, तो निश्चित रूप से अपने घर को सकारात्मक ऊर्जा का स्त्रोत बनाया जा सकता है, जो कि घर में रहने वाले सदस्यो के लिए उन्नति का द्वार खोल सकता है। वास्तुशास्त्र के सम्बंध में विभिन्न तरह के विवरण वृहद संहिता, पुष्कर संहिता, समरांगण सूत्रधार, मयमत एंव मानसार आदि में उपलब्ध है। वास्तुपुरूष मंडल का वैज्ञानिक आधार भी है। वैज्ञानिक अनुसंधान से यह पता चलता है कि आक्सीजन की मात्रा पृथ्वी की सतह के नीचे भी उपलब्ध है। यदि हम पृथ्वी को एक जीवित वस्तु मान ले तो वास्तु के विभिन्न सिंद्वातो को आसानी से समझा जा सकता है।

❋❋❋

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

शेष पेज 11 से आगे .....

शिवजी प्रसन्न हुए और उन्होने प्रकट होकर उस विष को निर्मल कर दिया और उसे अपने कंठ से सुशोभित किया।उस दिन भी चतुर्दशी थी और तब से जन्म मरण रूप हलाहल से त्राण पाने के लिए श्रद्धालुजन प्रतिवर्ष रात्रि को शिव रात्रि का नाम दे, मोक्ष प्रदान करने वाले भगवान शिव का पूजन करते आ रहे है। इक्ष्वांकु वंश में मित्रसह नाम के राजा हुए थे। वह शास्त्रज्ञ और शस्त्रज्ञ तो थे ही, अत्यन्त दयालु भी थे। स्वभावतः उन्हे शिकार खेलते समय उनके साथ अद्भुत घटना घटी। वन में सहसा एक भयानक आकृति वाला राक्षस प्रकट हुआ। राजा मित्रसह ने एक ही बाण में उसके प्राण हर लिए।

निशाचर का एक अनुज था, जो वहीं छिपा था। भाई का इस प्रकार संहार होते देख उसने राजा से बदला लेने का संकल्प लिया। जो शत्रु अपने से बलवान होता है, वह प्रायः छल द्वारा पराजित कर दिया जाता है। निशाचर ने भी इसी नीति के अनुसार मनुष्य की आकृति बनाई और मित्रसह के सम्मुख उपस्थित हो गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की– महाराज! मै निर्धन हूँ और परिस्थिति ने मुझे विवश किया है कि मैं ग्राम छोड़कर वन में भटक रहा हूँ। आप तो स्वभाव से ही दयालु है। अपना सेवक बनाकर कृतार्थ कीजिए।

राजा ने प्रश्न किया क्या तुमने किसी कार्य में विशेष योग्यता प्राप्त की है। मनुष्य रूपधारी निशाचर ने तुरन्त उत्तर दिया महाराज मैं भोजन बनाने में बहुत दक्ष हूँ।

मित्रसह यह सुनकर प्रसन्न हुआ। और उसे रसोईये के रूप में रख लिया। कुछ समय बीता। मित्रसह के यहाँ एक बार त्रिकालदर्शी मुनि वशिष्ठ जी आमन्त्रित हुए। निशाचर जानता था कि भगवान के क्रोध से चाहे किसी तरह रक्षा हो जाए, पर तपस्वी ब्राहाण के क्रोध ा से छुटकारा पाना असम्भव हैं। अतः उसने वशिष्ठ जी के भोजन में छल करके मनुष्य का मांस मिला दिया। भोजन का थाल सामने आते ही वशिष्ठ जी जिन्होने अपने क्रोध को जीत लिया था। तनिक रूष्ट हुए और बोले राजन। तुम्हें धिक्कार है, तुमने मुझे मनुष्य का मांस परोस दिया है। इस पाप के कारण तुम राक्षस हो जाओगे। मित्रसह काँप उठा और हाथ जोड़कर वशिष्ठजी से अनुनय विनय करने लगा– मेरी करतूत नहीं ओर न ही मैं इस विषय में कुछ जानता हूँ। तब राजा ने वन में एक अपरिचित मनुष्य से भेंट होने और उसे रसोईए का काम सौंपने का वृतान्त सुनाया। खोज करने पर भी उस समय वह रसोईया कहीं नहीं मिल सका।

तब वशिष्ठ जी ने अपने शाप को बारह वर्ष के लिए सीमित कर दिया। लेकिन मित्रसह राज्याभिमानसे विवेक खो बैठा और वशिष्ठ जी को भी शाप देने के लिए उद्यत हो गया। इसी समय उसकी रानी मदयन्ती ने पति के चरणों में गिरकर उन्हें ऐसा करने से रोका। यह कहने लगी गुरू का क्रोध भी हमारे कल्याण के लिए होता है। आप धर्म के ज्ञाता है, ऐसा न करे। तब राजा ने रानी के वचनों का मान रख लिया और अंजली के जल को अपने पैरों पर डाल लिया। इससे उनके पैर मलिन हो गए और तब से उनका नाम कल्माषपाद हो गया।

गुरू के शाप से राजा मित्रसह राक्षस के शरीर वन में विचरने लगे। तब एक दिन उन्होने एक मुनिकुमार को खानें के लिए पकड़ लिया। उसकी धर्म परायण स्त्री अत्यन्त करूण वाणी में बोली महाराज आप राक्षस नहीं है, आप अयोध्या के सम्राट है, ऐसा पाप नहीं कीजिये। इस मुनिकुमार को प्राणदान देकर आप जगत की रक्षा करने का पुण्य प्राप्त करेंगें। मैं एक ब्राह्मण स्त्री हूँ, कृपा कीजिये। पर राक्षस बुद्धि में यह धर्म युक्त बात कैसे ठहरती? उस राक्षस बने मित्रसह ने मुनिकुमार की गर्दन मरोड़ डाली और उन्हें उदरस्थ कर लिया।

उसी स्त्री ने पति की हड्डियों को एकत्रित कर चिता प्रज्वलित की और राक्षस शरीर वाले मित्रसह को शाप दिया तुमने अकारण ही मेरे पति को खा लिया है, अतः जब तुम स्त्री का संग करोगे तो उसी क्षण तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। ऐसा शाप देकर वह पतिव्रता स्त्री चिता की अग्नि में कूद पड़ी।

शाप निवृत होने पर जब राजा मित्रसह अपनी राजधानी में लौटे तब उन्हें रानी मदयन्ती ने पतिव्रता के शाप को जानते हुए उन्हे अपने पास नहीं आने दिया। राजा खिन्न हो गये और उन्हे सुखभोग से विरक्ति हो गई। वह सम्पूर्ण राज्य और लक्ष्मी का परित्याग कर पुनः वन में आ गये। मनुष्य चाहे वन में अथवा किसी भी एकान्त प्रदेश में क्यों न चला जाये, उसका पाप उसे नहीं छोडता। मुनि कुमार की हत्या उन्होने की थी, अतः पिशाची के रूप में ब्रहम हत्या निरन्तर उनके पीछे पीछे चलती और बराबर भयभीत करती रही। वह घबराकर मिथिला में आये। वहाँ किसी पुण्य के फलस्वरूप मुनि गौतम से उनकी भेंट हो गई।

सन्त का समागम महान फल देने वाला होता है। राजा ने अपना दुःख मुनिश्रेष्ठ गौतम के आगे प्रकट कर दिया। मुनि गौतम ने तब बताया भगवान शंकर की शरण में आये हुए भक्तो को भय कहाँ हो सकता है? मुनि गौतम का उपदेश सुनकर राजा मित्रसह गोकर्ण क्षेत्र में आये और शिवरात्रि के दिन भक्तिपूर्वक शिवजी की पूजा कर उन्होने परमगति प्राप्त कर ली।

❋❋❋

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

शेष पेज 5 से आगे.....

प्रश्न– क्या फेंगसुई के उपायों से वास्तु दोष निवारण हो सकता है?

उत्तर– फेंगसुई के उपाय खुशी का मनमोहक वातावरण पैदा करते हैं। यही वास्तु का भी मूल सिद्वांत है अतः फेंगसुई के उपायों को साथ में प्रयोग करके वास्तु दोषों का निवारण किया जा सकता है।

प्रश्न– वास्तुदोष निवारण यंत्र का क्या महत्व है?

उत्तर– वास्तुदोष निवारण यंत्र स्थापित करने से धनात्मक ऊर्जा का सृजन होता है।

प्रश्न– वास्तु में पिरामिंड शक्ति का क्या महत्व है?

उत्तर– पिरामिड द्वारा धनात्मक ऊर्जा को केन्द्रित कर लिया जाता है।अतः पिरामिड का उपयोग कई प्रकार के वास्तुदोषो को दूर करता है।

प्रश्न– क्या दीवारों का रंग बदलने से वास्तु दोष का निवारण होता है?

उत्तर– वास्तु में रंगो का बहुत महत्व है हर दिशा का अपना स्वामी एंव रंग है। यदि दिशानुसार दीवारों पर रंग कराते है तो वे कई प्रकार के वास्तु दोषो को दूर करते है।

प्रश्न– वास्तु के अनुरूप सज्जा करने से क्या वास्तु दोष निवारण हो सकता है?

उत्तर– वास्तु का सही अर्थ में यही उपयोग है कि स्थान में आकर्षण हो एंव वायु मंडल शुद्ध हो। अतः कोई भी सज्जा वास्तु के अनुरूप होगी तो अवश्य अच्छी लगेगी या कोई भी सज्जा यदि मनमोहक लगती है, तो वह अवश्य वास्तु के अनुरूप होगी।

प्रश्न– वास्तु शास्त्री को बुलाये बिना क्या अपने घर का वास्तु खुद ठीक कर सकते है?

उत्तर– पुस्तकों से पढ़ कर कुछ हद तक वास्तु दोष निवारण कर सकते है। लेकिन कई बार कुछ महत्वपूर्ण विषय छूट जाते है या कुछ आवश्यक विषयों पर अधिक सोचते रहते है। अतः एक ज्ञानी वास्तु शास्त्री से परामर्श करना अवश्य ही उचित रहता है।

❋ ❋ ❋

कालसर्प योग निवारण पूजन

दिनांक 17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि के पर्व पर भविष्य दर्शन एवं श्री बाबा रमण गिरि सेवा धाम द्वारा कालसर्प योग शान्ति हेतु पूजन एवं यज्ञ का आयोजन श्री नागमाता मन्दिर, वायु विहार रोड़, बोदला से बिचपुरी रोड़ पर किया जा रहा है। जो भी व्यक्ति कालसर्प योग की शान्ति कराना चाहते है वह अपना नाम पंजीकृत नीचे लिखे हुये फोन न. पर फोन कर के अवश्य करा लें।

फोन न. 9719666777, 9719005262

शेष पेज 9 से आगे.....

तिलस्नायी तिलोद्वार्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पापनाशनाः।। इति।।

1. तिलों के जल से स्नान करे,
2. पिसे हुए तिलों से उबटन करें।
3. तिलों का हवन करें।
4. तिलों से तर्पण करे।
5. तिलों के बने (मोदक, बर्फी या तिलकसरी) पदार्थो का भोजन एंव तिल मिश्रित जल का सेवन करें।
6. तिलों का दान करें तो सम्पूर्ण पापों का नाश हो जाता है।

इस व्रत की कथा इस प्रकार हैः

कथा– प्राचीन काल में मृत्युलोक में भगवान की परम भक्त एक ब्राह्मणी थी, वह सदैव भगवत्सम्बन्धी व्रतोपवास रखती, भगवान् की विधिवत् पूजा करती और नित्य निरन्तर भगवान का स्मरण किया करती थी। कठिन व्रत करने और पति सेवा एंव घर की सम्हाल रखने आदि से उसका शरीर दुर्बल हो गया था। किन्तु अपने जीवन में उसने दान के निमित किसी को एक दाना भी नहीं दिया था। एक दिन भगवान् ने विचार किया कि इस ब्राह्मणी ने व्रतादि से शरीर शुद्ध कर लिया है और इसको वैष्णव लोक भी प्राप्त हो जायेगा। परन्तु इसने कभी भी अन्नदान नहीं किया है इससे इसकी तृप्ति होना कठिन है ऐसा सोचकर भगवान ने मृत्यु लोक में आकर कपाली का रूप धारण कर उससे भिक्षा की याचना की, परन्तु उसने उन्हें भी कुछ नहीं दिया। अन्त में कपाली के ज्यादा बड़बड़ाने से उसने मिटटी का एक बहुत बड़ा ढेला दिया तो भगवान उसी से प्रसन्न हो गये और ब्राह्मणी को बैकुण्ठ का वास दिया। परन्तु वहाँ मिट्टी के परम मनोहर मकानों के सिवा और कुछ भी नहीं था। वह भगवान के पास आयी और बोली हे भगवान! मैने अनेको व्रत आदि से आपकी पूजा की है परन्तु फिर भी मेरा घर वस्तुओं से शून्य है। भगवान् ने उसे सम्पूर्ण गत कारणों का बोध कराकर कहा कि तुम अपने गृह जाओ, वहाँ देव स्त्रियाँ तुम्हारे दर्शन को आवेंगी। जब तुम उनसे षट्तिला एकादशी का पुण्य और विधि सुन लो तब ही द्वार खोलना।

भगवान के वचन सुनकर वह अपने घर को गयी और जब देव स्त्रियाँ आकर द्वार खुलवाने लगीं तब ब्राह्मणी बोली कि यदि आप मुझे देखने आयी है तो षट्तिला एकादशी का माहात्म्य कहिये। तब देव स्त्रियों ने षट्तिला का माहात्म्य सुना दिया तब उसने द्वार खोला। देव स्त्रियों ने उसको सब स्त्रियों से अलग पाया। ब्राह्मणी ने देव स्त्रियों के कथनानुसार षट्तिला एकादशी का विधिवत् व्रत किया और इसके प्रभाव से उसका गृह धन धान्य से भरपूर हो गया। अतः सभी को इस एकादशी का व्रत करना चाहिये। इससे जन्म–जन्म में आरोग्यता प्राप्त होती है और दरिद्रता नष्ट हो जाती है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते है। सम्पूर्ण जगत् में उसे सम्मान प्राप्त होता है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि जैसे शरीर में पाँच तत्वों (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) का समावेश आवश्यक है उसी प्रकार धर्म अध्यात्म के क्षेत्र में भी सत्य, तप, पवित्रता, दया, दानादि सभी का अपना अपना विशेष महत्व है।

❋ ❋ ❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262